

કારતકારો કે વિધે એક રાહનુમા તહરીર



ઉરુર કે અહકામ

(ઝમીન કી ઝકાત કે મસાલલ)



હસ રિસાલે મેં આપ પઢેઝે

ઉરુર કિસે કેહતે હૈં ?

ઉરુર દેને કી કઝીલત

ઉરુર કિસ પેઠાવર પર વાજિબ હૈં ?

ઉરુર કમ ઓર કિસે દિયા જાએ ?

ઠેકે પર હી હુઈ ઝમીન પર ઉરુર કા હુકમ

ઉરુર દેને કા તરીકા



દા'વતે ઉસ્લામી કી ઝલિધ્યાં

પેસાકશ: મખલિસ અલ મદીનતુલ હલિધ્યા

(દા'વતે ઉસ્લામી)
(શો'ખલે ઉસ્લામી કુલુબ)

મકતબ-મતુલ મદીના

مکتبۃ الدین

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ ટી મલિદ ઠે સામને, વીલ દરવાઝા, અહમદાબાદ-1 ગુજરાત, ઇન્ડિયા
Ph: 91-79- 25391168 E-mail: maktabehind@gmail.com
www.dawateislami.net

दुइते पाक की इजीलत	<u>4</u>
उशर का भयान	<u>4</u>
उशर के इजाईल	<u>4</u>
उशर अदा न करने का वबाल	<u>5</u>
किस पैदावार पर उशर वाजिब है ?	<u>6</u>
शहद की पैदावार पर उशर	<u>7</u>
किस पैदावार पर उशर वाजिब नहीं ?	<u>7</u>
उशर वाजिब होने के लिये कम अऊ कम मिकदार	<u>8</u>
पागल और ना बालिग पर उशर	<u>8</u>
कर्मदार पर उशर	<u>8</u>
शर-ई इकीर पर उशर	<u>9</u>
उशर के लिये साल गुजरना शर्त है या नहीं ?	<u>9</u>
मुप्तलिक जमीनों का उशर	<u>9</u>
ठेके की जमीनों का उशर	<u>9</u>
अगर भुद इस्ल न बोई तो उशर किस पर है ?	<u>9</u>
मुशरिका जमीन का उशर	<u>10</u>
घरेलू पैदावार पर उशर	<u>10</u>
उशर की अदाअेगी से पहले अप्राजात अलग करना	<u>10</u>
उशर की अदाअेगी	<u>11</u>
उशर पेशगी अदा करना	<u>11</u>
इल जाडिर होने और भेती तैयार होने से मुराद	<u>11</u>
पैदावार बेय दी तो उशर किस पर है ?	<u>11</u>
उशर की अदाअेगी में ताप्पीर	<u>12</u>
उशर अदा करने से पहले पैदावार का ईस्ते'माव	<u>12</u>
उशर देने से पहले झौत छो गया तो ?	<u>12</u>
उशर में रकम देना	<u>12</u>
अगर तवील अरसे से उशर अदा न किया छो तो ?	<u>13</u>
अगर इस्ल ही काशत न की तो ?	<u>13</u>
इस्ल जाअेअ होने की सूरत में उशर	<u>13</u>
उशर किस को दिया जाअे	<u>13</u>
जिन को उशर नहीं दे सकते	<u>15</u>
ईमामे मस्जिद को उशर देना	<u>16</u>
भरीइ की इस्लें, सब्जियां और इल	<u>17</u>
रबीअ की इस्लें, सब्जियां और इल	<u>17</u>
दा'वते ईस्लामी के साथ तआवुन कीजिये	<u>17</u>
दा'वते ईस्लामी की जल्कियां	<u>18</u>
मआभजो मराजेअ	<u>22</u>

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल मदीनतुल इल्मिया

अज: बानीअे द्द'वते इस्लामी, आशिके आ'ला हजरत, शैजे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रजवी जियाई तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक "द्द'वते इस्लामी" नेकी की द्द'वत, अेह्याअे सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या त्तर में आम करने का अजमे मुसम्मम रजती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ખૂબી सर अन्जाम देने के लिये मुतअद्दिद मजलिस का क्रियाम अमल में लाया गया है जिन में से अेक मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिया" भी है जे द्द'वते इस्लामी के उ-लमा व मुक्कितयाने किराम كَثْرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुशतमिल है, जिस ने जालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीडा उठाया है. इस के मुन्दरिजअे जैल छे शो'बे हें :

- (1) शो'बअे कुतुबे आ'ला हजरत
- (2) शो'बअे दसी कुतुब
- (3) शो'बअे इस्लाही कुतुब
- (4) शो'बअे तराजिमे कुतुब
- (5) शो'बअे तफ्तीशे कुतुब
- (6) शो'बअे तज्रीज

"अल मदीनतुल इल्मिया" की अक्वलीन तरज्जुह सरकारे आ'ला हजरत इमामे अहले सुन्नत, अजीमुल ब-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्मे रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, डामीअे सुन्नत, माहीअे बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसे जैरो ब-र-कत, हजरते अल्लामा मौलाना अल्लाज अल हाफिज अल कारी अश्शाह इमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायअे तसानीइको अस्रे हाजिर के तकाजों के मुताबिक हतल वुस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है. तमाम इस्लामी त्ताई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती म-दनी काम में हर मुक्किन तआवुन इरमाअें और मजलिस की तरफसे शाअेअ डोने वाली कुतुब का ખુद भी मुतालआ इरमाअें और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाअें.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "द्द'वते इस्लामी" की तमाम मजलिस ब शुमूल "अल मदीनतुल इल्मिया" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता इरमाअे और हमारे हर अमले जैर को जेवरे इप्लास से आरास्ता इरमा कर डोनों जहां की त्तालई का सभब बनाअे. हमें जेरे गुम्बडे खजूरा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदइन और जन्नतुल किरदौस में जगह नसीब इरमाअे.



اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

र-मजानुल मुबारक सिने 1425 हिजरी

पेश लइज

मीठे मीठे इस्लामी त्तालईयो !

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक "द्द'वते इस्लामी" की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिया" (शो'बअे इस्लाही कुतुब) की तरफ से मुप्तलिफ मौजूआत पर अब तक दरजनों किताबें और रसाईल अवामे अहले सुन्नत की

भिदमत में पेश किये जा चुके हैं. इल वक्त इकड़ी मौजूअ पर मुश्तमिल रिसाला “उश्र के अहकाम (पैदावारे जमीन की जकात के मसाएल)” आप के सामने है. इस मुफ्तसर रिसाले में उश्र से मुतअद्लिक एन तमाम मसाएल का एहाता करने की कोशिश की गई है जिन की जरूरत काश्तकार एस्वामी भाएयों को पेश आ सकती है.

इस रिसाले को न सिर्फ़ जुद पढिये बल्के दूसरे एस्वामी भाएयों बिल्भुसूस जमीनदार एस्वामी भाएयों को इस के मुताबआ की तरगीअ दे कर सवाबे जारिया के मुस्तहक बनिये. अल्लाह तआला से दुआ है के हमें “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की एस्वाह की कोशिश” करने के लिये म-दनी एन्आमात पर अमल और म-दनी काइलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक अता इरमाओ और दा'वते एस्वामी की तमाम मजलिस अ शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल एल्मिया को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़ी अता इरमाओ.

امین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

शो'अओ एस्वाही कुतुअ (मजलिसे अल मदीनतुल एल्मिया)

दुइडे पाक की इजीलत

रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एशाद इरमाया: ओ लोगो ! बेशक बरोओे कियामत इस की दहशतों और हिसाअ किताअ से जल्द नजात पाने वाला शप्स वोह डोगा जिस ने तुम में से मुज पर दुन्या के अन्दर अ कसरत दुइद शरीफ़ पढे डोंगे.'

(इरदौसुल अम्बार, अल हदीस:8210, जिल्द:2, स-इहा:471)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

उश्र का अयान

सुवाल : उश्र किये केहते हैं ?

जवाअ : जमीन से नइअ हासिल करने की ग-रज से उगाई जाने वाली शय की पैदावार पर जो जकात अदा की जाती है उसे उश्र केहते हैं.

(अल इतावल हिन्दिया, किताअजजकात, अल बाबुस्सादिस, जिल्द:1, स-इहा:185, मुलम्भसन)

सुवाल : जमीन की जकात को उश्र क्यूं केहते हैं ?

जवाअ : जमीन की पैदावार का उमूमन दस्वां (1/10) हिस्सा अतौरे जकात दिया जाता है इस लिये एसे उश्र (या'नी दस्वां हिस्सा) केहते हैं.

उश्र के इजाअल

सुवाल : उश्र देने की क्या इजीलत है ?

जवाअ : उश्र की अदाओगी करने वालों को एन्आमाते आभिरत की भिशारत है जैसा के कुरआने पाक में अल्लाह तआला एशाद इरमाता है :

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ

تَرْجَمَوه कन्जुल एमान: और जो चीज तुम अल्लाह की राह में अर्थ करो वोह इस के बदले और देगा और वोह सब से बेहतर रिजक يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزَاقِينَ 0 देने वाला.

(पारह:22, सबा:39)

सूरअे अकरड में है :

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِئَةٌ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ **0** **الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَنَافِعٌ مِمَّا أَنْفَقُوا مَنَافِعُ لَا تَبْغُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنَافِعُ لَا تَبْغُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنَافِعُ لَا تَبْغُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنَافِعُ لَا تَبْغُونَ مَا أَنْفَقُوا** **0**

तर्जमअे कन्जुल ईमान: उन की कडावत जो अपने माल अल्लाह की राह में अर्य करते हैं उस दाने की तरह जिसने उगार्ई सात बालें. हर बाल में सौ दाने और अल्लाह ईस से भी जियादा बढाअे जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुस्अत वाला ईल्म वाला है वोह जो अपने माल अल्लाह की राह में अर्य करते हैं, फिर दिये पीछे न अेहसान रभें न तकलीफ दें उन का नेग (ईन्आम) उन के रभ के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ गम.

सरवरे आलम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने भी तरगीबे उम्मत के लिये कई मकामात पर राहे भुदा **عَزَّوَجَلَّ** में अर्य करने के कई इजाईल बयान किये हैं : युनान्ये

उअरते सय्यिदुना **عَلَيْهِ السَّلَام** से भरवी है के नबिय्ये करीम, रउिफुरहीम ने ईशाद ईरमाया : “अक़ात दे कर अपने मालों को मअभूत कल्अों में कर लो और अपने बीमारों का ईलाज स-दके से करो और बला नाजिल होने पर दुआ व तअर्रोअ (या’नी गिर्या व ज़ारी) से ईस्तिआनत (या’नी मदद तलब) करो.”

(मरासील अभी दावूद मअ सुनने अभी दावूद, बाबो इस्साईम, स-इला:8)

और उअरते सय्यिदुना ज़ाबिर **عَلَيْهِ السَّلَام** से रिवायत है के नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अइलाक **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ईशाद ईरमाया: “जिस ने अपने माल की अक़ात अदा कर दी, बेशक अल्लाह तआला ने उस से शर दूर इरमा दिया.”

(अल मु’जमुल अवसत, बाबे अलिफ़, अल उदीस:1579, जिल्द:1, स-इला:431)

उशर अदा न करने का वजाल

सुवाल : उशर अदा न करने का क्या वजाल है ?

जवाब : उशर अदा न करने वाले के लिये कुरआने पाक व अलादीसे मुबारका में सप्त वईदें आई हैं.

युनान्ये अल्लाह तआला ईशाद इरमाता है :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۚ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخُلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ **ط**

तर्जमअे कन्जुल ईमान: और जो भुखल करते हैं उस चीज में जो अल्लाह ने उन्हें अपने इअल से दी, हरगिज उसे अपने लिये अख़ा न समजें बल्के वोह उन के लिये बुरा है अनकरीब वोह जिस में भुखल किया था कियामत के दिन उन के गले का तोक होगा.

(पारड:4, आवे ईमरान:180)

उअरते सय्यिदुना अबू दुरैरा **عَلَيْهِ السَّلَام** से रिवायत है के मक्की म-दनी सरकार, दो आलम के मालिको मुप्तार **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ईशाद इरमाया: “जिस को अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** माल दे और वोह उस की अक़ात अदा न करे तो कियामत के दिन वोह माल गन्जे सांप की सूरत में

कर दिया जाएगा जिस के सर पर दो चित्तियां होंगी (या'नी दो निशान होंगे), वोह सांप उस के गले में तोक बना कर डाल दिया जाएगा, फिर उस (जकात न देने वाले) की बाछें पकड़ेगा और कहेगा: मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा भजाना हूं. इस के बाद नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अइलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस आयत की तिलावत इरमाई:

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ तर्जमअे कन्जुल इमान: और जो बुज्जल करते हैं उस चीज में जो **بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ** अल्लाह ने उन्हें अपने इज्जल से दी, हरगिज उसे अपने लिये **خَيْرًا لَهُمْ دَبْلُ هُوَ شَرٌّ** अच्छा न समजें बल्के वोह उन के लिये बुरा है अनकरीब वोह **لَهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ** जिस में बुज्जल किया था कियामत के दिन उन के गले का तोक **يَوْمَ الْقِيَامَةِ** डोगा.

(पारह:3, आले इमरान:180)

(सहीदुल बुभारी, किताबुज्जकात, बाबो इस्मे मानि'उज्जकात, अल हदीस:1403, जिल्द:1, स-इहा:474)

उज्जते सय्यिहुना बुरीदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के सरकारे मदीना, राहते कलबो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशार्द इरमाया : “जो कौम जकात न देगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे कडत में मुज्तला इरमायेगा.’

(अल मुअ्जमुल अवसत, अल हदीस:4577, जिल्द:3, स-इहा:275)

उज्जते सय्यिहुना अभीरुल मुअ्मिनीन उमर इरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के नबिय्ये करीम, रउकुर'डीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशार्द इरमाया: “बुशकी व तरी में जो माल तलइ होता है, वोह जकात न देने की वजह से तलइ होता है.”

(कन्जुल उम्मा, किताबुज्जकात, अल इस्लुस्सानी इ तरहीब माने'उज्जकात, अल हदीस:15803, जिल्द:6, स-इहा:131)

किस पैदावार पर उशर वाजिब है ?

सुवाल : जमीन की किस पैदावार पर उशर वाजिब है ?

जवाब : जो चीजें ऐसी हों के इन की पैदावार से जमीन का नइअ हासिल करना मकसूद हो ज्वाह वोह गल्ला, अनाज और इल इट हों या सब्जियां वगैरा म-सलन अनाज और गल्ले में गन्धुम, जव, यावल, गन्ना, कपास, जुवार, धान (यावल), बाजरा, मूंगइली, मकई, और सूरज मुषी, राई, सरसों और लोसन वगैरा.

इलों में जरबूजा, आम, अम्रुद, मालटा, लूकाट, सेब, यीकू, अनार, नाशपाती, जपानी इल, संगतरा, पपीता, और नारियल, तरबूज, इल्सा, जमुन, लीची, लीमूं, जूबानी, आडू, जजूर, आलू बुभारा, गरमा, अनन्नास, अंगूर और आलूया वगैरा.

सब्जियों में ककड़ी, टींडा, करेला, बिंडी तूरी, आलू, टमाटर, घियातूरी, सब्ज मिर्य, शिम्ला मिर्य, पोदीना, जीरा, ककड़ी (तर) और इर्वी, तोरिया, इल गोभी, बन्दगोभी, शलगम, गाजर, चुकन्दर, मटर, प्याज, लहसन, पलक, धनिया और

मुप्तलिङ्ग किस्म के साग और मेथी और बेंगन वगैरा. इन सब की पैदावार में से उश्र (या'नी दस्वां हिस्सा) या निस्फ़ उश्र (या'नी बीस्वां हिस्सा) वाजिब है.

(अल इतावत हिन्दिया, किताबुज्जक़ात, अल बाबुस्सादिस, जिल्द:1, स-इला:186)

अल्लाह तआला ने सूरतुल अन्आम में इरमाया:

وَأْتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ तर्जुमअ कन्जुल इमान: भेती कटने के दिन उस का हक़ अदा करो.

(पारह:8, अल अन्आम:142)

इमामे अहले सुन्नत मुजदिदे दीनो मिल्लत, परवानअे शम्मे रिसालत, अश्शाह इमाम अहमद रज़ा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن विभते है के अक्सर मुफ़्फ़िसरीन म-सलन हज़रत इब्ने अब्बास, ताउिस, हसन, ज़ाबिर बिन ज़ैद और सईद बिन मुसय्यब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के नज़दीक़ इस हक़ से मुराद उश्र है.

(इतावा र-अविया जदीद, किताबुज्जक़ात, जिल्द:10, स-इला:65)

1. मोसिम के अे'तेबार से इस्लों, इलों और सब्जियों की तफ़्सील स-इला:15 पर मुलाहज़ा इरमाअें.

नबिय्ये करीम, रउकुर्लीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशार्द इरमाया: “हर उस शय में जिसे ज़मीन ने निकाला, (उस में) उश्र या निस्फ़ उश्र है.”

(कन्जुल उम्माह, किताबुज्जक़ात, बाबो ज़क़ात-न्नबाति वल इवाक़िद, अल हदीस:15873, जिल्द:6, स-इला:140)

हज़रते सय्यिदुना ज़ाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भयान करते है के रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशार्द इरमाया: “जिन ज़मीनों को दरया और बारिश सैराब करे उन में उश्र (दस्वां हिस्सा देना वाजिब) है और जो ज़मीनें उांट के ज़रीअे सैराब की ज़ाअें उन में निस्फ़ उश्र (बिस्वां हिस्सा वाजिब) है.”

(सहीह मुस्लिम, किताबुज्जक़ात, बाबो माईहिल उश्र अव निस्फ़ उश्र, अल हदीस:981, स-इला:488)

सुवाल : निस्फ़ उश्र से क्या मुराद है ?

जवाब : निस्फ़ उश्र से मुराद बीस्वां हिस्सा 1/20 है.

(भहारे शरीअत, हिस्सा:5, स-इला:15)

शहद की पैदावार पर उश्र

सुवाल : उश्री ज़मीन में जो शहद पैदा हो क्या उस पर भी उश्र देना पड़ेगा ?

जवाब : ज़ हां.

(अल इतावत हिन्दिया, किताबुज्जक़ात, अल बाबुस्सादिस, जिल्द:1, स-इला:186)

किन पैदावार पर उश्र वाजिब नहीं ?

सुवाल : किन इस्लों पर उश्र वाजिब नहीं ?

जवाब : जो चीज़ें ऐसी हों के उन की पैदावार से ज़मीन का नफ़्अ हासिल करना मकसूद न हो उन में उश्र नहीं जैसे इंधन, घास, बैद, सरकन्डा, ज़ाव (वोह पौदा जिस से टोक़रियां बनाई जाती हैं), अज़ूर के पत्ते वगैरा, इन के इलावा हर किस्म की तरकारियों और इलों के बीज के

ઇન કી ખેતી સે તરકારિયાં મક્સૂદ હોતી હેં બીજ મક્સૂદ નહીં હોતે ઓર જો બીજ દવા કે તૌર પર ઈસ્તે'માલ હોતે હેં મ-સલન યુકન્દર, મેથી ઓર કલોંજી વગૈરા કે બીજ, ઉન મેં ભી ઉશર નહીં હૈ. ઈસી તરહ વોહ ચીઝેં જો ઝમીન કે તાબેઅ હોં જૈસે દરખ્ત ઓર જો ચીઝ દરખ્ત સે નિકલે જૈસે ગૂંદ, ઈસ મેં ઉશર વાજિબ નહીં.

અલબત્તા અગર ઘાસ, બૈદ, ઝાવ (વોહ પૌદા જિસ સે ટોકરિયાં બનાઈ જાતી હેં) વગૈરા સે ઝમીન કે મનાફેઅ હાસિલ કરના મક્સૂદ હો ઓર ઝમીન ઉન કે લિયે ખાલી છોડ દી તો ઉન મેં ભી ઉશર વાજિબ હૈ. કપાસ ઓર બેંગન કે પૌદોં મેં ઉશર નહીં મગર ઈન સે હાસિલ કપાસ ઓર બેંગન કી પૈદાવાર મેં ઉશર હૈ.

(દુર્રે મુખ્તાર, કિતાબુઝ્ઝકાત, બાબુલ ઉશર, જિલ્દ:૩, સ-ફહા:૩૧૫, અલ ફતાવલ હિન્દિયા, કિતાબુઝ્ઝકાત, અલ બાબુસ્સાદિસ ફી ઝકાત ઝરઅ, જિલ્દ:૧, સ-ફહા:૧૮૬)

ઉશર વાજિબ હોને કે લિયે કમ અઝ કમ મિકદાર

સુવાલ : ઉશર વાજિબ હોને કે લિયે ગલ્લા, ફલ ઓર સબ્જિયોં કી કમ અઝ કમ કિતની મિકદાર હોના ઝરૂરી હૈ ?

જવાબ : ઉશર વાજિબ હોને કે લિયે ઈન કી કોઈ મિકદાર મુકરર નહીં હૈ બલકે ઝમીન સે ગલ્લા, ફલ ઓર સબ્જિયોં કી જિતની પૈદાવાર ભી હાસિલ હો ઉસ પર ઉશર યા નિસ્ફ ઉશર દેના વાજિબ હોગા.

www.dawateislami.net

(અલ ફતાવલ હિન્દિયા, અલ મર્જિ'ઉસ્સાબિક)

પાગલ ઓર ના બાલિગ પર ઉશર

સુવાલ : અગર ઉન કી પૈદાવાર કા માલિક પાગલ ઓર ના બાલિગ હો તો ઉસ કો ભી ઉશર દેના હોગા ?

જવાબ : ઉશર ચૂં કે ઝમીન કી પૈદાવાર પર અદા ક્રિયા જાતા હૈ લિહાઝા જો ભી ઈસ પૈદાવાર કા માલિક હોગા વોહ ઉશર અદા કરેગા ચાહે વોહ મજનૂન (યા'ની પગલ) ઓર ના બાલિગ હી ક્યૂં ન હો.

(અલ ફતાવલ હિન્દિયા, કિતાબુઝ્ઝકાત, અલ બાબુસ્સાદિસ ફી ઝકાતિ ઝરઅ, જિલ્દ:૧, સ-ફહા:૧૮૫, મુલાખ્ખસન)

કર્જદાર પર ઉશર

સુવાલ : ક્યા કર્જદાર કો ઉશર મુઆફ હૈ ?

જવાબ : કર્જદાર સે ઉશર મુઆફ નહીં, ઈસ લિયે અગર કર્જ લે કર ઝમીન ખરીદી હો યા કાશ્ત કાર પહલે સે મકરૂઝ હો યા કર્જ લે કર કાશ્તકારી કી હો ઈન સબ સૂરતોં મેં કર્જદાર પર ભી ઉશર વાજિબ હૈ.”

(અદ્દર્ફુલ મુખ્તાર વ રફૂદુલ મુહ્તાર, કિતાબુઝ્ઝકાત બાબુલ ઉશર, જિલ્દ:૩, સ-ફહા:૩૧૪)

અલ્લામા આલિમ બિન ઉલા અલ અન્સારી رحمته الله عليه; ફરમાતે હેં કે “ઝકાત કે બર ખિલાફ ઉશર મકરૂઝ પર ભી વાજિબ હોતા હૈ.”

(ફતાવા તાતારખાનિયા, કિતાબુલ ઉશર, જિલ્દ:૨, સ-ફહા:૩૩૦)

शर-ईं इकीर पर उशर

सुवाल : क्या शर-ईं इकीर पर भी उशर वाजिब होगा ?

जवाब : जो हां, शर-ईं इकीर पर भी उशर वाजिब है क्यूंके उशर वाजिब होने का सबब जमीने नामी (या'नी काबिल काशत) से हकीकतन पैदावार का होना है, इस में मादिक के गनी या इकीर होने का कोई अ'तेबार नहीं.

(भाभूज मिनल र्नायति वल किफाया, किताबुज्जकात, बाबो जकतिज्जुअ, जिल्द:2, स-इला:188)

उशर के लिये साल गुजरना शर्त है या नहीं ?

सुवाल : क्या उशर वाजिब होने के लिये साल गुजरना शर्त है ?

जवाब : उशर वाजिब होने के लिये पूरा साल गुजरना शर्त नहीं बल्के साल में अक ही भेत में यन्द बार पैदावार हुई तो हर बार उशर वाजिब है.

(अहदुर्दुल मुप्तार व रद्दुल मुप्तार, किताबुज्जकात, बाबुल उशर, जिल्द:3, स-इला:313)

मुप्तलिफ् जमीनों का उशर

सुवाल : मुप्तलिफ् जमीनों को सैराब करने के लिये अलग अलग तरीके इस्ते'माल किये जाते हैं, तो क्या हर किस्म की जमीन में उशर (या'नी दस्वां डिस्सा ही) वाजिब होगा ?

जवाब : इस सलिसले में काईदा येह है के

★ जो भेत बारिश, नहर, नाले के पानी से (कीमत अदा किये बिगैर) सैराब किया जाये, इस में उशर या'नी दस्वां डिस्सा वाजिब है,

★ अगर (नहर या ट्यूब वेल वगैरा का) पानी जरीद कर आबपाशी की हो या'नी वोह पानी किसी की मिल्कियत है उस से जरीद कर आबपाशी की, जब भी निस्फ उशर वाजिब है,

★ अगर वोह भेत कुछ दिनों बारिश के पानी से सैराब कर दिया जाता है और कुछ डोल (या अपने ट्यूब वेल) वगैरा से, तो अगर अक्सर बारिश के पानी से काम लिया जाता है और कभी कभी डोल (या अपने ट्यूब वेल) वगैरा से तो उशर वाजिब है वरना निस्फ उशर वाजिब है.

(दुरे मुप्तार व रद्दुल मुप्तार, किताबुज्जकात, बाबुल उशर, जिल्द:3, स-इला:316)

ठेके की जमीनों का उशर

सुवाल : क्या ठेके पर दी जाने वाली जमीन की पैदावार पर भी उशर होगा ?

जवाब : जो हां, ठेके पर दी जाने वाली जमीन की पैदावार पर भी उशर होगा.

सुवाल : येह उशर कौन अदा करेगा ?

जवाब : इस उशर की अदाअेगी काशतकार पर वाजिब होगी.

(रद्दुल मुप्तार, किताबुज्जकात, बाबुल उशर, जिल्द:3, स-इला:314)

अगर भुद इस्ल न जोई तो उशर किस पर है ?

सुवाल : अगर जमीन का मादिक भुद भेतीबाडी में डिस्सा न ले बल्के मुजारियों से काम ले तो उशर मुजारिअ पर होगा या मादिके जमीन पर ?

જવાબ : ઇસ સિલ્સિલે મેં દેખા જાએગા કે

અગર મુઝારિઅ સે મુરાદ વોહ હૈ જો ઝમીન બટાઈ પર લેતા હૈ યા'ની પૈદાવાર મેં સે આધા યા તીસરા હિસ્સા વગૈરા માલિકે ઝમીન કા ઔર બકિયા મુઝારિઅ કા હો તો ઇસ સૂરત મેં દોનોં પર ઇન કે હિસ્સે કે મુતાબિક ઉશર વાજિબ હોગા સદ્દુશરીઆ, બદ્દુતરીકા, મૌલાના અમજદ અલી આ'ઝમી رحمة الله تعالى عليه, બહારે શરીઅત મેં ફરમાતે હૈં, “ઉશરી ઝમીન બટાઈ પર દી તો ઉશર દોનોં પર હૈ.”

(બહારે શરીઅત, જિલ્દ:5, સ-ફહા:54)

ઔર અગર મુઝારિઅ સે મુરાદ વોહ હૈ કે જિસ કો માલિકે ઝમીન ને ઝમીન ઇજારે પર દી મ-સલન ફી એકઝ પયાસ હઝાર રૂપિયા તો ઇસ સૂરત મેં ઉશર મુઝારિઅ પર હોગા માલિકે ઝમીન પર નહીં.

(માખૂઝ અઝ બદાએઉસ્સનાએઅ, જિલ્દ:2, સ-ફહા:84)

મુશ્તરિકા ઝમીન કા ઉશર

સુવાલ : જો ઝમીન કિસી કી મુશ્તરિકા મિલિકિયત હો તો ઉશર કૌન અદા કરેગા ?

જવાબ : ઉશર કી અદાએગી મેં ઝમીન કા માલિક હોના શર્ત નહીં હૈ બલકે પૈદાવાર કા માલિક હોના શર્ત હૈ ઇસ લિયે જો જિતની પૈદાવાર કા માલિક હોગા વોહ ઉસ પૈદાવાર કા ઉશર અદા કરેગા. ફતાવા શામી મેં હૈ કે “ઉશર વાજિબ હોને કે લિયે ઝમીન કા માલિક હોના શર્ત નહીં બલકે પૈદાવાર કા માલિક હોના શર્ત હૈ ક્યૂંકે ઉશર પૈદાવાર પર વાજિબ હોતા હૈ ન કે ઝમીન પર, ઔર ઝમીન કા માલિક હોના યા ન હોના દોનોં બરાબર હૈ.”

(રદ્દુલ મુહ્તાર, કિતાબઝઝકાત, બાબુલ ઉશર, જિલ્દ:3, સ-ફહા:314)

ઘરેલૂ પૈદાવાર પર ઉશર

સુવાલ : ઘર યા કબ્રિસ્તાન મેં જો પૈદાવાર હો ઉસ પર ઉશર હોગા યા નહીં ?

જવાબ : ઘર યા કબ્રિસ્તાન મેં જો પૈદાવાર હો, ઉસ મેં ઉશર વાજિબ નહીં હૈ.

(અદ્દુરુલ મુખ્તાર, કિતાબઝઝકાત, મતલુબુન મુહિમ્મુન ફી હુકમે આરાઝી મિસ્ર વશ્શામ સુલ્તાનિયા, જિલ્દ:3, સ-ફહા:320)

ઉશર કી અદાએગી સે પહેલે અપ્રાજાત અલગ કરના

સુવાલ : ક્યા ઉશર કુલ પૈદાવાર સે અદા કિયા જાએગા યા અપ્રાજાત નિકાલ કર બકિયા પૈદાવાર સે અદા કિયા જાએગા ?

જવાબ : જિસ પૈદાવાર મેં ઉશર યા નિસ્ફ ઉશર વાજિબ હો, ઇસ મેં કુલ પૈદાવાર કા ઉશર યા નિસ્ફ ઉશર લિયા જાએગા. એસા નહીં હૈ કે ઝરાઅત, હલ, બેલ, હિફાઝત કરને વાલે ઔર કામ કરને વાલોં કી ઉજરત યા બીજ, ખાદ ઔર અદવિયાત વગૈરા કે અપ્રાજાત નિકાલ કર બાકી કા ઉશર યા નિસ્ફ ઉશર દિયા જાએ.

(અદ્દુરુલ મુખ્તાર વ રદ્દુલ મુહ્તાર, કિતાબઝઝકાત, મતલુબુન મુહિમ્મુન ફી હુકમે આરાઝી મિસ્ર વશ્શામ સુલ્તાનિયા, જિલ્દ:3, સ-ફહા:317)

સુવાલ : હુકૂમત કો જો માલ ગુઝારી દી જાતી હૈ ક્યા ઉસે ભી પૈદાવાર સે નહીં નિકાલા જાએગા ?
જવાબ : જી નહીં, ઈસ માલ ગુઝારી કો ભી પૈદાવાર સે અલગ નહીં ક્રિયા જાએગા બલકે ઉસે ભી શામિલ કર કે ઉશર કા હિસાબ લગાયા જાએગા.

ઉશર કી અદાએગી

સુવાલ : ઉશર કબ અદા કરના હોગા ?

જવાબ : જબ પૈદાવાર હાસિલ હો જાએ યા'ની ફસ્લ પક જાએ યા ફલ નિકલ આએં ઓર નફ્અ ઉઠાને કે કાબિલ હો જાએં તો ઉશર વાજિબ હો જાએગા. ફસ્લ કાટને યા ફલ તોડને કે બા'દ હિસાબ લગા કર ઉશર અદા કરના હોગા.

(અદ્દુરુલ મુખ્તાર વ રદ્દુલ મુહ્તાર, કિતાબુઝ્ઝકાત, બાબુલ ઉશર, મત્લુબુન મુહિમ્મુન ફી હુકમે આરાઝી...અલબ, જિલ્દ:૩, સ-ફહા:૩૨૧)

ઉશર પેશગી અદા કરના

સુવાલ : ક્યા ઉશર પેશગી તૌર પર અદા ક્રિયા જા સકતા હૈ ?

જવાબ : ઈસ કી ચન્દ સૂરતેં હેં:

- (૧) જબ ખેતી તૈયાર હો જાએ તો ઉસ કા ઉશર પેશગી દેના જાઈઝ હૈ.
- (૨) ખેતી બોને ઓર ઝાહિર હોને કે બા'દ અદા ક્રિયા તો ભી જાઈઝ હૈ.
- (૩) અગર બોને કે બા'દ ઓર ઝાહિર હોને સે પહલે અદા ક્રિયા તો અઝહર (યા ઝિયાદા ઝાહિર) યેહ હૈ કે પેશગી અદા કરના જાઈઝ નહીં.
- (૪) ફલોં કે ઝાહિર હોને સે પહલે દિયા તો પેશગી દેના જાઈઝ નહીં ઓર ઝાહિર હોને કે બા'દ દિયા તો જાઈઝ હૈ.

(ફતાવા આલમગીરી, કિતાબુઝ્ઝકાત, જિલ્દ:૧, સ-ફહા:૧૮૬)

મદીના: અગર્યે ઝિક કી ગઈ બા'ઝ સૂરતોં મેં પેશગી ઉશર અદા કરના જાઈઝ હૈ લેકિન અફઝલ યેહ હૈ કે પૈદાવાર હાસિલ હોને કે બા'દ ઉશર અદા ક્રિયા જાએ.

(અલ બહરુરાઈક, કિતાબુઝ્ઝકાત, જિલ્દ:૨, સ-ફહા:૩૯૨)

ફલ ઝાહિર હોને ઓર ખેતી તૈયાર હોને સે મુરાદ

સુવાલ : ફલ ઝાહિર હોને ઓર ખેતી તૈયાર હોને સે ક્યા મુરાદ હૈ ?

જવાબ : ઈસ સે મુરાદ યેહ હૈ કે ખેતી ઈતની તૈયાર હો જાએ ઓર ફલ ઈતને પક જાએં કે ઈન કે ખરાબ હોને યા સૂખ જાને વગૈરા કા અન્દેશા ન રહે અગર્યે તોડને યા કાટને કે કાબિલ ન હુએ હોં.

(માબૂઝ અઝ ફતાવા ૨-અવિયા, જિલ્દ:૧૦, સ-ફહા:૨૪૧)

પૈદાવાર બેચ દી તો ઉશર કિસ પર હૈ ?

સુવાલ : ફલ ઝાહિર હોને ઓર ખેતી તૈયાર હોને કે બા'દ ફલ બેચે તો ઉશર બેચને વાલે પર હોગા યા ખરીદને વાલે પર ?

જવાબ : એસી સૂરત મેં ઉશર બેચને વાલે પર હોગા.

(માખૂઝ અઝ ફતાવા ૨-ઝવિયા, જિલ્દ:10, સ-ફહા:241)

ઉશર કી અદાએગી મેં તાખીર

સુવાલ : ઉશર અદા કરને મેં તાખીર કરના કેસા ?

જવાબ : ઉશર પૈદાવાર કી ઝકાત કા નામ હૈ ઈસ લિયે જો અહકામ ઝકાત કી અદાએગી કે હૈં, વોહી અહકામ ઉશર કી અદાએગી કે ભી હૈં. ઈસ લિયે બિગૈર મજબૂરી કે ઈસ કી અદાએગી મેં તાખીર કરનેવાલા ગુનહગાર હૈ ઓર ઉસ કી શહાદત (યા'ની ગવાહી) મકબૂલ નહીં.

(અલ ફતાવલ હિન્દિયા, કિતાબુઝઝકાત, અલ બાબુલ અવ્વલ, જિલ્દ:1, સ-ફહા:170)

સુવાલ : અગર કોઈ ઉશર વાજિબ હોને કે બા વુજૂદ અદા ન કરે તો ક્યા કરના ચાહિયે ?

જવાબ : જો ખુશી સે ઉશર ન દે તો બાદશાહે ઈસ્લામ જબરન (યા'ની ઝબરદસ્તી) ઉસ સે ઉશર લે સકતા હૈ ઓર ઈસ સૂરત મેં ભી ઉશર અદા હો જાએગા મગર સવાબ કા મુસ્તહક નહીં ઓર ખુશી સે અદા કરે તો સવાબ કા મુસ્તહક હૈ.”

(અલ ફતાવલ હિન્દિયા, કિતાબુઝઝકાત, અલ બાબુસ્સાદિસ ફી ઝકાતિઝઝરએ વસ્સમાર, જિલ્દ:1, સ-ફહા:185)

મદીના: યાદ રહે કે ઝબરદસ્તી ઉશર વુસૂલ કરના બાદશાહે ઈસ્લામ હી કા કામ હૈ આમ લોગોં કો યેહ ઈખ્તિયાર હાસિલ નહીં હૈ. એસી સૂરતે હાલ મેં ઉસે ઉશર અદા કરને કી તરગીબ દી જાએ ઓર રબ તઆલા કી નારાઝગી કા એહસાસ દિલાયા જાએ. એસે લોગોં કો યેહ રિસાલા પઢને કે લિયે તોહફતન પેશ કરના ભી બેહદ મુફીદ હોગા, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

ઉશર અદા કરને સે પહલે પૈદાવાર કા ઇસ્તે'માલ

સુવાલ : ક્યા ઉશર અદા કરને સે પહલે પૈદાવાર ઇસ્તે'માલ કર સકતે હૈં યા નહીં ?

જવાબ : જબ તક ઉશર અદા ન કર દે પૈદાવાર સે ઉશર અલગ ન કર લે, ઉસ વક્ત તક પૈદાવાર મેં સે કુછ ભી ઇસ્તે'માલ કરના જાઈઝ નહીં ઓર અગર ઇસ્તે'માલ કર લિયા તો ઈસ મેં જો ઉશર કી મિકદાર બનતી હૈ ઈતના તાવાન અદા કરે અલબત્તા થોડા સા ઇસ્તે'માલ કર લિયા તો મુઆફ હૈ.

(અફુરુલ મુખ્તાર વ રફુલ મુહ્તાર, કિતાબુઝઝકાત, મુત્તલબહમ ફી હુકમે અરાઝી મિસ્ર અલખ, જિલ્દ:3, સ-ફહા:321,322)

ઉશર દેને સે પહલે ફૈત હો ગયા તો ?

સુવાલ : જિસ પર ઉશર વાજિબ હો ઓર વોહ ફૈત હો જાએ ઓર પૈદાવાર ભી મૌજૂદ હૈ તો ક્યા ઈસ મેં સે ઉશર દિયા જાએગા ?

જવાબ : એસી સૂરત મેં અગર પૈદાવાર મૌજૂદ હો તો ઈસ પૈદાવાર મેં સે ઉશર દિયા જાએગા.

(અલ ફતાવલ હિન્દિયા, કિતાબુઝઝકાત, અલ બાબુસ્સાદિસ ફી ઝકાતુઝરઅ, જિલ્દ:1, સ-ફહા:185)

ઉશર મેં રકમ દેના

સુવાલ : ક્યા ઉશર મેં સિર્ફ પૈદાવાર હી દેની હોગી યા ઉસ કી કીમત ભી દી જા સકતી હૈ ?

જવાબ : મૌજૂદા ફસ્લ મેં સે જિસ કદર ગલ્લા યા ફલ હોં ઉન કા પૂરા ઉશર અલાહિદા કરે યા

ઇસ કી પૂરી કીમત (બતૌરે ઉશર) દે, દોનોં તરહ સે જાઈઝ હૈ.

(અલ ફતાવલ મુસ્તફવિયા, સ-ફહા:298)

અગર તવીલ અરસે સે ઉશર અદા ન કિયા હો તો ?

સુવાલ : અગર કઈ સાલ ઉશર અદા ન કિયા તો ક્યા કિયા જાએ ?

જવાબ : ઉશર કી અદમે અદાએગી પર તૌબા કરે ઓર સાબિકા સાલોં કે ઉશર કા હિસાબ લગા કર બ કદરે ઈસ્તિતાઅત અદા કરતા રહે.

(માખૂઝ અઝ અલ ફતાવલ હિન્દિયા અલ મુસ્તફવિયા, સ-ફહા:298)

અગર ફસ્લ હી કાશત ન કી તો ?

સુવાલ : અગર ઝરાઅત પર કાદિર હોને કે બા વુજૂદ કિસી ને ફસ્લ કાશત નહીં કી તો ક્યા ઈસ સૂરત મેં ભી ઈસ પર ઉશર વાજિબ હોગા ?

જવાબ : અગર કિસી ને ઝરાઅત પર કાદિર હોને કે બા વુજૂદ અગર ફસ્લ કાશત નહીં કી તો પૈદાવાર ન હોને કી બિના પર ઉસ પર ઉશર કી અદાએગી વાજિબ નહીં ક્યું કે ઉશર ઝમીન પર નહીં ઉસ કી પૈદાવાર પર વાજિબ હોતા હૈ.

(રદુલ મુહ્તાર, કિતાબઝઝકાત, બાબુલ ઉશર, જિલ્દ:3, સ-ફહા:323)

ફસ્લ ઝાએઅ હોને કી સૂરત મેં ઉશર

સુવાલ : અગર કિસી વજહ સે ફસ્લ ઝાએઅ હો ગઈ તો ઉશર વાજિબ હોગા ?

જવાબ : ખેત બોયા મગર પૈદાવાર ઝાએઅ હો ગઈ મ-સલન ખેતી રૂબ ગઈ યા જલ ગઈ યા સર્દી ઓર લૂ સે જાતી રહી તો ઈન સબ સૂરતોં મેં ઉશર સાકિત હૈ, જબ કે કુલ જાતી રહી ઓર અગર કુછ બાકી હૈ તો ઈસ બાકી કા ઉશર લેંગે ઓર અગર જાનવર ખા ગએ તો (ઉશર) સાકિત નહીં ઓર (ઉશર) સાકિત હોને કે લિયે યેહ ભી શર્ત હૈ કે ઈસ કે બા'દ ઈસ સાલ કે અન્દર ઈસ મેં દૂસરી ઝરાઅત તૈયાર ન હો સકે ઓર યેહ ભી શર્ત હૈ કે તોડને યા કાટને સે પહલે હલાક હો વરના સાકિત નહીં.

(રદુલ મુહ્તાર, કિતાબઝઝકાત, જિલ્દ:3, સ-ફહા:323)

ઉશર કિસ કો દિયા જાએ

સુવાલ : ઉશર કિસે દિયા જાએ ?

જવાબ : ઉશર ચૂંકે ખેત કી પૈદાવાર કી ઝકાત કા નામ હૈ, ઈસ લિયે જિન કો ઝકાત દી જા સકતી હૈ ઉન કો ઉશર ભી દિયા જા સકતા હૈ.

(અલ ફતાવલ ખાનિયા, કિતાબઝઝકાત, ફસ્લ ફીલ ઉશર ફી માયખુજુહુલ અર્દ, જિલ્દ:1, સ-ફહા:132)

ઈન લોગોં કો ઝકાત દી જા સકતી હૈ :

(1) ફકીર (2) મિસ્કીન (3) આમિલ (4) રિકાબ (5) ગારિમ (6) ફી સબીલિલ્લાહ (7) ઈબ્નુસ્સબીલ યા'ની મુસાફિર.

(અલ ફતાવલ હિન્દિયા, કિતાબઝઝકાત, અલ બાબુસ્સાબેઅ ફીલ મસારિફ, જિલ્દ:1, સ-ફહા:187)

वर्गगत

इकीर: वोह जो मादिके निसाब न हो. मादिके निसाब होने से मुराद येह है किसी शप्स के पास साढे सात तोला सोना, या साढे भावन तोला चांदी, या एतनी मादियत की रकम, या एतनी मादियत का मावे तिजारत हो, या एतनी मादियत का अर्रियाते जिन्दगी से जाँद सामान हो और उस पर अल्लाह तआला या बन्दों का एतना कर्ज न हो के जिसे अदा कर के जिंक कर्दा निसाब बाकी न रहे.

(अल इतावल हिन्दिया, किताबुज्जकात, अल बाबुस्साबेअ हिल मसारिक, जिद:1, स-इहा:187)

मदीना: अर्रियाते जिन्दगी से मुराद वोह चीजें हैं जिन की उमूमन एन्सान को अर्रत होती है और एन के बिगैर गुजर अवकात में शदीद तंगी व दुश्वारी महसूस होती है जैसे रहने का घर, पहनने के कपडे, सुवारी, एल्मे दीन से मुतअद्विक किताबें और पेशे से मुतअद्विक अवजार वगैरा. अल्लाह तआला के कर्ज से मुराद साबिका जकात या कुरबानी वाजिब होने के बा वुजूद न करने की सूरत में जानवर की कीमत स-दका करना है.

मिस्कीन: वोह है जिस के पास कुछ न हो यहां तक के वोह जाने और बदन छुपाने के लिये एस का मोहताज है के लोगों से सुवाल करे.

(अल मर्जउस्साबिक)

आमिल: वोह है जिसे बादशाहे एस्लाम ने जकात और उशर वुसूल करने के लिये मुकर्रर किया हो.

(अल मर्जउस्साबिक, स-इहा:188)

मदीना: सदुशरीआ, बदरुत्तरीका मुस्ती मुहम्मद अमजद अली आ'उमी رحمة الله تعالى عليه, बहारे शरीअत में इरमाते हैं के “आमिल अगर्ये गनी हो अपने काम की उजरत ले सकता है और हाशिमी हो तो उस को मावे जकात में से देना भी ना जाँज और उसे लेना भी ना जाँज, हां अगर किसी और मद (या'नी जिम्न) में दें तो लेने में ह-रज नहीं.” (लेकिन ई जमाना शर-ए आमिल मौजूद नहीं हैं)

(बहारे शरीअत, हिस्सा:5, स-इहा:57)

रिकाब: से मुराद मकातिब गुलाम है. मकातिब उस गुलाम को केहते हैं जिस से उस के आका ने उस की आजादी के लिये कुछ कीमत अदा करना तै की हो. ई जमाना रिकाब मौजूद नहीं.

(अल मर्जउस्साबिक)

गारिम: से मुराद मक़ूज़ है या'नी उस पर एतना कर्ज हो के उसे निकालने के बा'द जकात का निसाब बाकी न रहे अगर्ये एस का दूसरों पर कर्ज बाकी हो मगर लेने पर कुदरत न रખता हो.

(अदुर्लुल मुफ्तार मअ रदुल मुह्तार, किताबुज्जकात, बाबुल मस्रफ, जिद:3, स-इहा:339)

ई सबीदिल्लाह: या'नी राहे जुदा جودا में अर्प करना, एस की यन्द सूरतें हैं.

(1) कोई शप्स मोहताज है और येह जिहाद में जाना चाहता है एस के पास सुवारी और जादे राह नहीं हैं तो एस मावे जकात दे सकते हैं के येह राहे जुदा جودا में देना है अगर्ये वोह कमाने पर

कादिर हो.

(2) कोई हज के लिये जाना याहता है और उस के पास जादेराह नहीं उस को जकात दे सकते हैं लेकिन उसे हज के लिये लोगों से सुवाल करना जाईज नहीं.

(3) तालिबे एल्म, एल्मे दीन पढता है या पढना याहता है उस को भी दे सकते हैं के येह राहे जुदा ۞ में ખર્ચ करना है बल्के तालिबे एल्म सुवाल कर के भी मावे जकात ले सकता है अगर्चे वोह कमाने पर कुदरत रખता हो.

(4) एसी तरह हर नेक काम में मावे जकात एस्ते'माव करना ई सबीविल्वाह या'नी अल्वाह ۞ की राह में ખર્च करना है. मावे जकात (और उशर) में दूसरे को मालिक कर देना जरूरी है, बिगैर मालिक किये जकात अदा नहीं हो सकती.

(अदुर्ल मुप्तार, किताबज्जकात, बाबुल मसरफ, जिल्द:3, स-इला:335)

एब्ने सबीव: या'नी वोह मुसाफिर (यहां मुसाफिर से मुराद शर-ए मुसाफिर है और शर-ए मुसाफिर वोह है जो तकरीबन 92 किलो मीटर सफर करने का एरादा रખता हो) जिस के पास सफर की हालत में माल न रहा, येह जकात ले सकता है अगर्चे एस के घर में माल मौजूद हो मगर उसी कदर ले जिस से एस की जरूरत पूरी हो जाये, जियादा की एजाजत नहीं.

(अव इतावल हिन्धिया, किताबज्जकात, अव बाबुस्साबेअ इल मसारिफ, जिल्द:1, स-इला:188)

मदीना (1): सदुशशरीआ, बदुत्तरीका मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ और जकारे शरीअत में इरमाते हैं के “जिन लोगों की निस्बत येह बयान किया है के उन्हें जकात दे सकते हैं उन सब का इकीर होना शर्त है सिवाये आमिल के के एस के लिये इकीर होना शर्त नहीं और एब्नुसबीव (मुसाफिर) अगर्चे गनी हो उस वक्त इकीर के हुकम में है बाकी किसी को जो इकीर न हो जकात नहीं दे सकते.”

(बहारे शरीअत, डिस्सा:5, स-इला:63)

मदीना (2): जकात देने वाले को एप्तिथार होता है के याहे तो उशर को एन तमाम अइराद में थोडा थोडा तकसीम कर दे और अगर याहे तो किसी अक ही को दे दे. अगर मावे जकात एतना है के ब कदरे निसाब नहीं है तो अक ही शप्स को दे देना अइजल है और अगर ब कदरे निसाब है तो अक ही शप्स को दे देना मकरुह है, लेकिन जकात बहर हाल अदा हो जायेगी. हां अगर वोह शप्स गारिम या'नी कर्जदार है तो एस को एतना दे देना के कर्ज निकाल कर कुछ न बये या निसाब से कम बये, बिला कराहत जाईज है.

(बहारे शरीअत, डिस्सा:5, स-इला:59)

जिन को उशर नहीं दे सकते

सुवाल : वोह कौन से लोग हैं जिन को उशर नहीं दे सकते ?

जवाब : उशर यूंके भेत की पैदावार की जकात का नाम है एस लिये जिन को जकात नहीं दे सकते उन को उशर भी नहीं दे सकते. म-सलन

(1) बनी हाशिम (या'नी सादाते किराम) को जकात नहीं दे सकते याहे देने वाला हाशिमी हो या गैरे हाशिमी. बनी हाशिम से मुराद हजरते अली व जा'इर व अकील और हजरते अब्बास व

हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हैं।

(बहारे शरीअत, डिस्सा:5, स-इला:63)

(2) अपनी अस्ल या'नी मां, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी, वगैरा और जिन की औलाद में येह (या'नी जकात देने वाला) है और अपनी औलाद म-सलन, भेटा, भेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी वगैरा को जकात नहीं दे सकते।

(रदुल मुह्तार, किताबुज्जकात, बाबुल मसरफ, जिल्द:3, स-इला:344)

(4) भियां बीवी अेक दूसरे को जकात नहीं दे सकते। इसी तरह अगर शौहर तलाक दे चुका हो और औरत इदत में हो तो शौहर उसे जकात नहीं दे सकता और अगर इदत गुजर चुकी है तो जकात दे सकता है।

(अदुरुल मुफ्तार व रदुल मुह्तार, किताबुज्जकात, बाबुल मसरफ, जिल्द:3, स-इला:345)

इमामे मस्जिद को उशर देना

सुवाल : क्या इमामे मस्जिद को उशर दिया जा सकता है ?

जवाब : इमामे मस्जिद साहिब अगर शर-ई इकीर न हों या सय्यिद साहिब हों तो उन को उशर नहीं दिया जा सकता और अगर वोह शर-ई इकीर हों और सय्यिद जादे न हों तो इस को उशर दिया जा सकता है बल्के अगर वोह आलिम हों तो उन्हीं को देना अइजल है। मगर आलिम को देते वक्त इस बात का लिहाज रखा जाये के उस का अहतिराम पेशे नजर हो और देने वाला अदब के साथ दे जैसे छोटे बड़ों को कोई चीज नज़र करते हैं और بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ आलिमे दीन को देते वक्त अगर इकारत दिल में आई तो येह इलाकत बल्के बहोत बड़ी इलाकत है।

(बहारे शरीअत, डिस्सा:5, स-इला:63)

इतावा आलमगीरी में है के “इकीर आलिम पर स-दका करना जाहिल इकीर पर स-दका करने से अइजल है।”

(अल इतावल इन्दिआ, किताबुज्जकात, अल बाबुस्साबेअ इल मसारिफ, जिल्द:1, स-इला:187)

सुवाल : इमामे मस्जिद को बतौरे उजरत उशर देना कैसा ?

जवाब : इमामे मस्जिद को (हीलअे शर-ई के बिगैर) ब तौरे उजरत उशर देना जाईज नहीं क्यूं के मस्जिद मसारिफे जकात में नहीं है और उशर के अइकाम वोही हैं जो जकात के हैं।

(माबूज्ज मिनल इतावल इन्दिआ, किताबुज्जकात, अल बाबुस्साबेअ इल मसारिफ, जिल्द:1, स-इला:188)

मदीना: हुकडाअे किराम بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ जकात (व उशर) का शर-ई हीला करने का तरीका यूं ईशाई इरमाते हैं, के इकीर को (जकात की रकम का) मालिक कर दें और वोह (ता'मीरे मस्जिद वगैरा में) सई करे, इस तरह सवाब दोनों को होगा।

(रदुल मुह्तार, जिल्द:3, स-इला:343)

मजीद तइसील के लिये “कजा नमाजों का तरीका” अज अभीरे अहले सुन्नत,

બાનીએ દા'વતે ઇસ્લામી મૌલાના મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી رحمته الله عليه કા મુતાલઆ કરે.

ખરીફ કી ફસ્લેં, સઙ્ગિયાં ઓર ફલ

ખરીફ : ઇસ સે મુરાદ મૌસિમે ગરમા કી ફસ્લેં હૈં જિન કી કાશત મૌસિમે ગરમા કે આગાઝ મેં માર્ચ તા જૂન જબ કે કટાઈ મૌસિમે ગરમા કે ઇખ્તિતામ ઓર ખઝાં મેં અગસ્ત તા નવમ્બર હોતી હૈ.

ખરીફ કી અહમ્મ ફસ્લેં :

કપાસ, જુવાર, ધાન (ચાવલ), બાજરા, મૂંગફલી, મકઈ, કમાદ (યા'ની ગન્ના) ઓર સૂરજ મુખી ખરીફ કી અહમ્મ ફસ્લેં હૈં દાલોં મેં દાલ મૂંગ, દાલ માશ ઓર લોબિયા ખરીફ મેં કાશત હોતી હૈં.

સઙ્ગિયાં: ગર્મિયોં મેં કૂશરીફ, ટિંડા, કરેલા, ભીંડી તૂરી, આલૂ, ટમાટર, ઘિચ્યાતૂરી, સજ્જ મિર્ય, શિમ્લા મિર્ય, પોદીના, ખીરા, કકડી (તર) ઓર અર્વી શામિલ હૈં.

ફલ: મૌસિમે ગર્મા મેં ખરબૂઝા, તરબૂઝ, આમ, ફાલ્સા, જામુન, લીચી, લીમૂં, ખૂબાની, આડૂ, ખજૂર, આલૂ બુખારા, ગર્મા, અનન્નાસ, અંગૂર ઓર આલૂયા શામિલ હૈં.

રબીઅ કી ફસ્લેં, સઙ્ગિયાં ઓર ફલ

રબીઅ: ઇસ સે મુરાદ મૌસિમે સરમા કી ફસ્લેં હૈં જિન કી કાશત મૌસિમે સરમા કે આગાઝ મેં અક્ટૂબર સે દિસમ્બર તક હોતી હૈ ઓર કટાઈ મૌસિમે સરમા કે ઇખ્તિતામ ઓર મૌસિમે બહાર મેં જનવરી તા એપ્રીલ હોતી હૈ.

રબીઅ કી અહમ્મ ફસ્લેં:

રબીઅ કી અહમ્મ ફસ્લોં મેં ગન્દુમ, ચને, જવ, બરસીમ, તોરિયા, રાઈ, સરસોં ઓર લૂસન હૈં દાલોં મેં મસૂર કી દાલ રબીઅ કી અહમ્મ ફસ્લ હૈ.

સઙ્ગિયાં : ઇસ મૌસિમ મેં ઉઠાઈ જાને વાલી સઙ્ગિયોં મેં ફૂલ ગોભી, બન્દ ગોભી, શલ્ગમ, ગાજર, ચુકન્દર, મટર, પ્યાઝ, લહસન, મૂલી, પાલક, ધનિયા ઓર મુખ્તલિફ કિસ્મ કે સાગ ઓર મેથી શામિલ હૈં.

ફલ: રબીઅ કે ફલોં મેં માલ્ટા, લોકાટા, બૈર, અમ્રૂદ, સેબ, ચીકૂ, અનાર, નાશપતી, આમલૂક (જાપાની ફલ), સંગતરા, પપીતા, ઓર નારિયલ શામિલ હૈં. ઉમૂમન શહદ ભી રબીઅ કી ફસ્લ કે સાથ હી હાસિલ ક્રિયા જાતા હૈ.

દા'વતે ઇસ્લામી કે સાથ તઆવુન કીજિયે

توبليگو کورآنو سوننت کي آلامگير گير سियाسي تھريک دا'وتے ٲسلامي 30 سے ٲياءا شو'با جات مے م-ءني کام کر رھي هے. براءے کر م ! अपनी ٲکات ٲشر اور س-ءکات व ٲैرات دا'وتے ٲسلامي کو دےने के साथ साथ अपने रिशते दारों, ٲडوسियों اور दोस्तों पर भी ٲन्हिरादी कोशिश ٲरमा कर ٲन के ٲकات व ٲشر اور दीगर अतिय्यात

दा'वते ईस्लामी के म-दनी मर्कज पर पढोंया कर या किसी जिम्मादार ईस्लामी भाई को दे कर या म-दनी मर्कज पर झोन कर के किसी ईस्लामी भाई को तलब इरमा कर उन्हें ईनायत इरमा दीजिये. अल्लाह ﷻ आप का सीना मदीना बनाओ. **امين بجاہ النبی الامین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

मकत-अतुल मदीना

1st इलोर, सिलेक्टेड हाउस, तीन दरवाजा, अहमदआबाद - 380001

झोन: 0091-79-25391168 • www.dawateislami.net

दा'वते ईस्लामी की गळियां

(1) **60 मुमादिक**: तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक "दा'वते ईस्लामी" ता दमे तहरीर दुन्या के तकरीबन 60 मुमादिक में अपना पैगाम पढोंया चुकी है और आगे कूय जारी है. (2) **कुइफार में तब्दीग**: लाजों बे अमल मुसल्मान, नमाजी और सुन्नतों के आदी बन चुके हैं. मुप्तदिफ मुमादिक में कुइफार भी मुबदिलगीने दा'वते ईस्लामी के हाथों मुशरफ बे ईस्लाम होते रहते हैं. (3) **म-दनी काइले**: आशिकाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के बे शुमार म-दनी काइले मुल्क बे मुल्क, शहर बे शहर और करिया बे करिया सइर कर के ईल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे हैं और नेकी की दा'वत की धूमें मया रहे हैं.

(4) **म-दनी तरबियत गाहें**: मुतअदद मकामात पर म-दनी तरबियत गाहें काईम हैं जिन में दूरो नजदीक से ईस्लामी भाई आ कर कियाम करते आशिकाने रसूल की सोहबत में सुन्नतों की तरबियत पाते और इर कुर्बो जवार में जा कर "नेकी की दा'वत" के म-दनी इल महकाते हैं.

(5) **मसाजिद की ता'भीर**: के लिये मजलिसे जुद्दामुल मसाजिद काईम है, मुतअदद मसाजिद की ता'भीरात का हर वक्त सिदिसला रहता है, कई शहरों में "म-दनी मर्कज इजाने मदीना" की ता'भीरात का काम भी जारी है.

(6) **आईम्मअे मसाजिद**: बेशुमार मसाजिद के ईमाम व मुअज्जिन और जादिमीन के मुशाहरे (तनज्वाहों) की अदाअेगी का भी सिदिसला है.

(7) **गूंगे, बहरे और नाबीना**: इन के अन्दर भी म-दनी काम हो रहा है और उन के म-दनी काइले भी सइर करते रहते हैं.

(8) **जेलखाने**: कैदियों की ता'लीम व तरबियत के लिये जेल खानों में भी म-दनी काम की तरकीब है. कई डाकू और जराईम पेशा अइराद जेल के अन्दर होने वाले म-दनी कामों से मुतअस्सर हो कर ताईब होने के बा'द रिहाई पा कर आशिकाने रसूल के साथ म-दनी काइलों के मुसाइर बनने और सुन्नतों बरी जिन्दगी गुजारने की सआदत

પા રહે હૈં, આતિશે અસ્લહે કે ઝરીએ અન્ધાધૂંદ ગોલિયાં ચલાને વાલે અબ સુન્નતોં કે મ-દની ફૂલ બરસા રહે હૈં ! મુબલિગીન કી ઈન્ફિરાદી કોશિશોં કે બાઈસ કુફર કેદી ભી મુશરફ બ ઈસ્લામ હો રહે હૈં.

(9) ઈજિતમાઈ એ'તિકાફ : દુન્યા કી બે શુમાર મસાજિદ મેં માહે ૨-મઝાનુલ મુબારક કે આબિરી અશરહ મેં ઈજિતમાઈ એ'તિકાફ કા એહતિમામ ક્રિયા જાતા હૈ. ઈન મેં ઈસ્લામી ભાઈ ઈલમે દીન હાસિલ કરતે, સુન્નતોં કી તરબિયત પાતે હૈં નીઝ કઈ મો'તકિફીન ચાંદરાત હી સે આશિકાને રસૂલ કે સાથ સુન્નતોં કી તરબિયત કે મ-દની કાફિલોં કે મુસાફિર બન જાતે હૈં.

(10) હજ કે બા'દ સબ સે બડા ઈજિતમાઅ : દુન્યા કે મુખ્તલિફ મુમાલિક મેં હઝારોં મકામાત પર હોને વાલે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઈજિતમાઆત કે ઈલાવા આલમી ઔર સૂબાઈ સત્હ પર ભી સુન્નતોં ભરે ઈજિતમાઆત હોતે હૈં. જિન મેં હઝારોં, લાખોં આશિકાને રસૂલ શિર્કત કરતે હૈં ઔર ઈજિતમાઅ કે બા'દ ખુશ નસીબ ઈસ્લામી ભાઈ સુન્નતોં કી તરબિયત કે મ-દની કાફિલોં કે મુસાફિર ભી બનતે હૈં. મદીનતુલ ઔલિયા મુલ્તાન શરીફ (પકિસ્તાન) મેં વાકેઅ સહરાએ મદીના કે કસીર રકબે પર હર સાલ ત્રીન દિન કા બૈનલ અક્વામી સુન્નતોં ભરા ઈજિતમાઅ હોતા હૈ. જિસ મેં દુન્યા કે કઈ મુમાલિક સે મ-દની કાફિલે શિર્કત કરતે હૈં. બિલા શુબા યેહ હજ કે બા'દ મુસલમાનોં કા સબ સે બડા ઈજિતમાઅ હોતા હૈ. સહરાએ મદીના મદીનતુલ ઔલિયા મુલ્તાન ઔર સહરાએ મદીના બાબુલ મદીના કરાચી કા કસીર રકબા દા'વતે ઈસ્લામી કી મિલિકિયત હૈ.

(11) ઈસ્લામી બહનોં મેં મ-દની ઈન્કિલાબ : ઈસ્લામી બહનોં કે ભી શર-ઈ પદેં કે સાથ મુતઅદદ મકામાત પર હફતાવાર ઈજિતમાઆત હોતે હૈં. લા તા'દાદ બે અમલ ઈસ્લામી બહનેં બા અમલ, નમાઝી ઔર મ-દની બુર્કોં કી પાબન્દ બન ચુકી હૈં. દુન્યા કે મુખ્તલિફ મુમાલિક મેં અક્સર ઘરોં કે અન્દર ઉન કે તકરીબન રોઝાના હઝારોં મદારિસ બનામ મદ્ર-સતુલ મદીના (બરાએ બાલિગાન) ભી લગાએ જાતે હૈં, એક અન્દાઝે કે મુતાબિક ફકત (બાબુલ મદીના કરાચી) મેં ઈસ્લામી બહનોં કે દો હઝાર મદ્રસે તકરીબન રોઝાના લગતે હૈં જિન મેં ઈસ્લામી બહનેં કુરઆને પાક, નમાઝ ઔર સુન્નતોં કી મુફત તા'લીમ પાતી ઔર દુઆએં યાદ કરતી હૈં.

(12) મ-દની ઈન્આમાત : ઈસ્લામી ભાઈયોં, ઈસ્લામી બહનોં ઔર તુલબા કો ફરાઈઝ વ વાજિબાત, સુનન વ મુસ્તહબ્બાત ઔર અખ્લાકિય્યાત કા પાબન્દ બનાને ઔર મોહલિકાત (યા'ની ગુનાહોં) સે બચાને કે લિયે મ-દની ઈન્આમાત કી સૂરત મેં એક નિઝામે અમલ દિયા ગયા હૈ. બે શુમાર ઈસ્લામી ભાઈ, ઈસ્લામી બહનેં ઔર તુ-લબા મ-દની ઈન્આમાત કે મુતાબિક અમલ કર કે રોઝાના સોને સે કબ્લ “ફિકે મદીના” યા'ની અપને આ'માલ કા જાઈઝા લે કર કાર્ડ યા પોકિટ સાઈઝ રિસાલે મેં દિયે ગએ

جانے پور کرتے ہیں۔

(13) م-دنیٰ موزاکرات: جسا अवकात म-दनी मोजाकुरात के ँजितमाआत का ँन्हेकाद भी डोता है।

जिस में अकाँदो आ'माल, शरीअत व तरीकत तारीओ सीरत, तिबाअत व डुडानियत वगैरा मुप्तलिङ्ग मौजूआत पर पूछे गअे सुवालात के जवाबात दिये जाते हैं। (येड जवाबात षुद अमीरे अडले सुन्नत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ँशाद इरमाते हैं। मजलिसे मक्त-अतुल मदीना)

(14) डुडानी ँलाज और ँस्तिआरा: दुड्यारे मुसल्मानों का ता'वीजात के जरीअे डी सबीलिद्लाड ँलाज डिया जाता है नीज ँस्तिआरा करने का सिदिसला भी है। रोजाना डजारों मुसल्मान ँस से मुस्तङ्गीज डोते हैं।

(15) डुजजज की तरबियत: डज के मौसिमे अडार में डज के म्पों में मुदिलगीने दा'वते ँस्लामी डजियों की तरबियत करते हैं। डज व जियारते मदीनअे मुनव्वरा में रहनुमाँ के लिये मदीने के मुसाङ्गिरों को डज की डिताअें भी मुङ्गत पेश की जाती है।

(16) ता'लीमी ँदारे: ता'लीमी ँदारों म-सलन दीनी मदरिस, स्कूड, कालिजिज और यूनिवर्सिडिज के असातिजा व तु-लआ को भीडे भीडे आका मदीने वाले मुस्तङ्ग صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों से ड शनास करवाने के लिये भी म-दनी काम डो रहा है। अे शुमार तुलआ सुन्नतों अरे ँजितमाआत में शिकत करते हैं नीज म-दनी काङ्गिलों के मुसाङ्गिर भी अनते रहते हैं। مُتَّخِذَةً لِلدِّينِ وَاللِّقَاتِ मुत्अदद दुन्यवी उलूम के दिलदाडड अे अमल तुलआ, नमाजी और सुन्नतों के आदी डो गअे।

(17) जामिअतुल मदीना: कसीर जामिआत अनाम “जामिअतुल मदीना” काँम हैं उन के जरीअे आ ता'दाद ँस्लामी आँयों को (अरअे जडरत डियाम व तआम की सहूलतों के साथ) दसे निजाभी (या'नी आलिम कोर्स) और ँस्लामी अडनों को आलिमा कोर्स की मुङ्गत ता'लीम दी जाती है। अडले सुन्नत के मदरिस के मुडकगीर ँदारे तन्जीमुल मदरिस (पाडिस्तान) की जानिअ से लिये जाने वाले ँम्तिडानात में अरसों से तकरीअन डर साल “दा'वते ँस्लामी” के जामिआत के तुलआ और तालिआत पाडिस्तान में नुमायां कामियाभी डसिल कर के जसा अवकात अव्वल, दुवुम और सिवुम पोजीशन डसिल करते हैं।

(18) मद्र-सतुल मदीना: अन्दूरने व अैडने मुडक डिङ्गो नाजैरा के आ ता'दाद मदरिस अनाम “मद्र-सतुल मदीना” काँम हैं। पाडिस्तान में ता दमे तडरीर कमो अेश 42000 (अयालीस डजार) म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को डिङ्गो नाजिरा की मुङ्गत ता'लीम दी जा रही है।

(19) मद्र-सतुल मदीना (आलिगान): ँसी तरड मुप्तलिङ्ग मसाजिद वगैरा में उमूमन आ'द नमाजे ँशा डजार ड मद्र-सतुल मदीना की तरडीअ डोती है जिन में ँस्लामी आँ

सडीह मजारिज से छुड़इ की दुरुस्त अदाअेगी के साथ कुरआने करीम सीजते और दूआअें याद करते, नमाअें वगैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की मुफ्त ता'लीम हासिल करते हैं.

(20) **शिक्षा जाने:** महदूद पैमाने पर शिक्षा जाने भी काँम हैं जहाँ बीमार तुलजा और म-दनी अमले का मुफ्त एलाज किया जाता है. जरूरतन दाखिल भी करते हैं नीज हस्बे जरूरत बडे अस्पतालों के जरीअे भी एलाज की तरकीब बनाई जाती है.

(21) **तपस्सुस फ़िल फ़िक्ह:** या'नी "मुफ़्ती कोर्स" का भी सिद्धिसला है जिस में मुतअदद उ-लमाअे किराम एफ़ता की तरबियत पा रहे हैं.

(22) **दारुल एफ़ता अहले सुन्नत:** मुसल्मानों के शर-ए मसाएल के हल के लिये मुतअदद "दारुल एफ़ता" काँम किये गअे हैं जहाँ दा'वते एस्लामी के मुबदिलगीन मुफ़्तयाने किराम, बिल मुशाफ़ा, तहरीरी और मक्तूबात के जरीअे शर-ए मसाएल का हल पेश कर रहे हैं. अक्सर इतावा कम्प्यूटर पर कम्पोज कर के दिये जाते हैं.

(23) **एन्टरनेट:** एन्टरनेट की वेब साईट www.dawateislami.net के जरीअे दुन्या भर में एस्लाम का पैगाम आम किया जा रहा है.

(24) **ASK THE IMAM:** दा'वते एस्लामी की website में ASK THE IMAM पर दुन्या भर के मुसल्मानों की तरफ़ से पूछे जाने वाले मसाएल का हल बताया जाता, कुफ़्फ़ार के एस्लाम पर अ'तेराजात के जवाबात दिये जाते और उन को एस्लाम की दा'वत पेश की जाती है.

(25,26) **मक्त-अतुल मदीना और अल मदीनतुल एल्मिया:** एन दोनों एदारों के जरीअे सरकारे आ'ला हजरत और दीगर उ-लमाअे अहले सुन्नत की किताबें जेवरे तब्ज से आरास्ता हो कर लाभों लाभ की ता'दाद में अवाम के हाथों में पहुँच कर सुन्नतों के इल बिला रही हैं. عَلَيْهِمُ السَّلَامُ दा'वते एस्लामी ने अपना प्रेस भी काँम कर लिया है. नीज सुन्नतों भरे बयानात और म-दनी मुजाकरात की लाभों केसेटें भी दुन्या भर में पहुँची और पहुँच रही हैं.

(27) **मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाएल:** गैर मोहतात कुतुब छापने के सबब उम्मते मुस्लिमा में झैलने वाली गुमराही और होने वाले गुनाहे जारिया के सदे बाब के लिये "मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाएल" काँम है जो मुसन्निफ़ीन व मुअदिलफ़ीन की कुतुबु को अकाएद, कुफ़्फ़ियात, अफ़्लाकियात, अरबी एबारात और फ़िक्ही मसाएल के हवाले से मुलाहजा कर के सनद जारी करती है.

(28) **मुफ्तविफ़ कोर्सिज:** मुबदिलगीन की तरबियत के लिये मुफ्तविफ़ कोर्सिज का अेहतिमाम किया गया है म-सलन 41 दिन का म-दनी काफ़िला कोर्स, 63 दिन का तरबियती कोर्स, गूगे बहुरों के लिये 30 दिन का तरबियत कोर्स, एमामत कोर्स और मुदर्रिस कोर्स वगैरहम.

(29) **झैजाने कुरआनो सुन्नत कोर्स:** एस्कूल, कालिज और यूनिवर्सिटी के तुलजा, असातिजा और स्टाफ़ को जरूरियाते दीन से इशनास करवाने के लिये अपनी नौएय्यत का मुन्फ़रिद "झैजाने कुरआनो सुन्नत कोर्स"भी शुइअ किया गया है, एस्लामी बहनों में भी येह कोर्स जारी है.

મઆખઝો મરાજેઅ

કુરઆન મજીદ તર્જમએ કન્ઝુલ ઈમાન	ઝિયાઉલ કુરઆન પબ્લીકેશન્ઝ, લાહૌર
સહીહુલ બુખારી	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા, બૈરૂત
સહીહ મુસ્લિમ	દારે ઈબ્ને હઝમ બૈરૂત
મરાસીલ અબી દાવૂદ મઅ અબી દાવૂદ	કુતુબ ખાના રશીદિયા, દહલી
અલ મુઅ્જમુલ અવસત	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા
દુરૂલ મુખ્તાર મઅ રદુલ મુહ્તાર	દારુલ મા'રેફા બૈરૂત
રદુલ મુહ્તાર	દારુલ મા'રેફા બૈરૂત
કન્ઝુલ ઉમ્માલ	દારુલ કુતુબ બૈરૂત
ફિરદૌસુલ અખ્બાર	દારુલ ફિક્ક બૈરૂત
અલ ફતાવલ હિન્દિયા	કોઈટા
અલ ફતાવલ ખાનિયા	પિશાવર
અલ બહરૂરાઈક	કોઈટા
અન્નાહરુલ ફાઈક	મુલ્તાન
ફતાવા ર-ઝવિયા	રઝા ફાઉન્ડેશન લાહૌર
અલ ફતાવલ મુસ્તફવિયા	શબ્બીર બિરાદર્ઝ લાહૌર
બહારે શરીઅત	મક્તબએ ર-ઝવિયા બાબુલ મદીના
બદાએઉસ્સનાએઅ	દારુલ ફિક્ક બૈરૂત